मामल्लपुरम : रथ मंदिरों का सांस्कृतिक महत्त्व

डॉ0 प्रवीण कुमार तिवारी
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
वीर बहादुर सिंह,
पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0 प्र0)

मामल्लपुरम अथवा महाबलिपुरम भारत के तमिलनाडु राज्य के चेंगलपट्टु जिले में स्थित एक प्राचीन नगर है। यह नगर अपने भव्य मंदिरों, स्थापत्य एवं सागर तटों के लिए प्रसिद्ध है। सातवीं शताब्दी में यह नगर पल्लव राजधानी के रुप में प्रख्यात रहा है। द्रविड़ स्थापत्य कला की दृष्टि से यह नगर एक आधार स्तम्भ माना जाता है। यहाँ पर पल्लव शासकों के द्वारा पत्थरों को काट कर अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया गया। इन मदिरों में रथ मंदिरों के नाम विख्यात एक श्रृंखला प्राप्त होती है। पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम ने प्राचीन कालीन बन्दरगाह नगर कदममलाई को महामल्लपुरम का नाम दिया। यह बन्दरगाह तथा नगर प्राचीन काल से ही व्यावसायिक रुप से महत्वपूर्ण रहा था।

मामल्लपुरम में नौ रथ मंदिर प्राप्त होते हैं। इनमें से पाँच रथ मंदिर एक अलग समूह का निर्माण करते हैं। इनकों पंचपाण्डव नाम दिया गया है। पंचपांडव रथ न तो किसी भी रुप में रथ है तथा न ही इनका महाभारत के नायकों से कोई सम्बन्ध है। यह शिव की पूजा के लिए बनाए गए मंदिर हैं। शिव के अतिरिक्त दुर्गा एवं विष्णु की पूजा के प्रमाण यहाँ से प्राप्त होते हैं।

धर्मराज रथ मंदिर विशालकाय तथा रथ मंदिर श्रृंखला की सबसे उत्कृष्ट प्रतीक है। चिन्तन एवं अद्वितीय कुलीनता धर्मराज रथ में दिखाई देती है। वर्गाकार आधार पीठिका वाले इस त्रितलीय विमान के आधार तल में दो गर्भगृह तथा तीन तरफ से स्तम्भ युक्त खुले हुए बरामदे बनाए गए हैं। इसका आधार वर्गाकार है, परन्तु ग्रीवा शिखर अष्टकोणीय है। इसके तीनों तलो पर गर्भगृह अधिस्थापित है। इसके निष्पादन में निर्माण की कक्षीय विधि को अपनाया गया है, जिसमें तीन संकेंद्रित, दीवारों से घिरे हुए एक दूसरे के भीतर ऊपर उठते हैं, इस तरह वह बीच में अंतराल छोड़ते जाते हैं। इस मंदिर के सबसे ऊपरी तल में एक मंदिर खोदा गया है। इसकी पिछली दीवारों पर सेवा में उपस्थित त्रिमूर्ति रुप में प्रतिष्ठित किया गया है। इस तल पर अन्य तलों के समान ताकों में विविध देवताओं तथा उनके विविध लक्षणों को प्रकट करती है।[1] इस मंदिर का प्रारम्भ नरसिंहवर्मन के द्वारा किया गया, इसका प्रमाण दूसरे तल के पूर्वी दीवारों पर स्थित लेख है। इस मंदिर की पूर्णता तथा वर्तमान स्थिति में पहुँचाने का श्रेय परमेश्वर वर्मन को दिया जाता है, जिसके सम्बन्ध में शीर्षतल पर अंकनों से संकेत मिलता है।

द्रौपदी रथ महाबलीपुरम से प्राप्त सभी रथों में सबसे लघु आकार का है। यह अपने सादे एवं सरल स्वरुप में कुटिया जैसे आकार में है। इसमें अनेक प्रकार की सजावटी डिजाइन उकेरे गए हैं। इसमें छप्पर वाली छत की नकल है। इस प्रकार के स्वरुप वाले मंदिरों के सम्बन्ध में प्रचलित है कि एक उत्सव के दौरान देवताओं द्वारा जल्दी से बनाया गया तथा फिर गांव के मंदिर के रुप में सेवा करने के लिए छोड़ दिया गया। द्रौपदी रथ को एक प्रमुख मूर्तिकार द्वारा स्वरुप प्रदान किया गया, जिसने झोपड़ी मंदिर को न केवल उत्कृष्ट अनुपात तथा एक निश्चित आकार वाली छत प्रदान की, वरन् अपने सम्पूर्ण रुप में देखने को मिलता है। यह रथ अपने स्वरुप में वर्गाकार है तथा इसमें विमान स्थापत्य के छह अंगों में से केवल चार अंगों का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। इस रथ में अधिष्ठानपाद, भित्ति, शिखर एवं स्तूपी को बनाया गया है। इसमें प्रस्तर एवं ग्रीवा का अभाव पाया जाता है। आधार से लेकर शीर्ष तक अपनी वर्गाकार आयोजना के कारण यह शुद्ध नागर शैली का उदाहरण माना जाता है। चतुर्वर्ग रथ चतुर्भुजी गुम्बदाकार छत तथा उस पर कलश की स्थापना इस शैली का द्योतक है। यह रथ दुर्गा को समर्पित माना जाता है। इसका प्रमाण यह है कि इसकी पिछली दीवारों पर अपने सेवकों के साथ खड़ी हुई आकृति उकेरी गई है।[2] रथ मंदिर के प्रवेश वाले हिस्से पर तथा आलों पर सुन्दर आकार एवं आनुपातिक मकर जैसी कृतियां केवल व्यक्तियों को प्रसन्नता प्रदान करने के लिए नहीं होती है। वरन् एक गहरे एवं अदृश्य भावों को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त की जाती थी। इस रथ में उत्कीर्ण ताखे अथवा आले भी मंदिर के साथ ब्रह्मांड की तीनों दिशाओं के समान हैं। मंदिर के भीतर दुर्गा के लाभकारी प्रभाव को विकीर्ण करने वाले विभिन्न प्रकार के मूर्ति शिल्प हैं। यहाँ पर पाए जाने वाले असंख्य दिव्य आकृतियों का विचार एवं अर्थ है, जो सभी दिशाओं में व्याप्त है।

मंदिर में कुछ खुदे हुए चित्रों में देवी कमल के आसन पर खड़ी मुद्रा में है, जबकि उनके दोनों ओर दो योद्धा घुटने टेक कर बैठे हुए हैं, इनमें से एक अपना सिर काटकर देवी को चढ़ाने की मुद्रा में है। यह दृश्य वराह गुफा मंदिर में दुर्गा फलक के समान दिखाई देता है। इस फलक के ऊपर की ओर चार उड़ते हुए गण दिखाए गए हैं, जो कि योद्धा के समान वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनमें से दो योद्धा मूँछ एवं गंभीर चेहरे वाले हैं।[3]

गणेश रथ उपस्थित सभी रथों में सबसे सुन्दर माना जाता है, इसके रुपों की समानता केवल धर्मराज रथ की राजसी भव्यता के द्वारा ही किया जा सकता है। विशाल ग्रेनाइट पहाड़ी के उत्तरी छोर पर स्थित, यह सर्वाधिक पूर्ण अवस्था में दिखाई देता है। गणेश रथ पीपे के आकार की छत के साथ पर्वत की पीठ को नौ अक्षुण्ण स्तूपों से सजाया गया है तथा उसके दोनो छोर पर एक सिर है, जो कि एक त्रिशूल का स्वरुप धारण करता है। छोटे बरामदे की पिछली दीवारों पर पल्लवों का एक लम्बा शिलालेख उकेरा गया है। इस शिलालेख में इस मंदिर को शिव का

घर कहा गया है तथा इसे अत्यतकाम पल्लवेश्वरम गृहम का नाम दिया गया है। अत्यतकाम का तात्पर्य है, जिसकी इच्छाएं असीम हैं। यह परमेश्वर का एक विरूद माना जाता है।[4] यह शिलालेख मुख्य रुप से शिव की प्रशंसा में लिखा गया है। इस शिलालेख का अन्तिम श्लोक, जिसके हृदय में रूद्र का निवास नहीं है, वह शापित है, धर्मराज मंडपम, रामानुज मंडपम तथा आदिवराह गुफा मंदिर में पाए गए छंदों के समान हैं, जो सभी राजा परमेश्वर द्वारा निर्मित अथवा पूर्ण किए गए हैं। यह छोटा सा मंदिर हर दृष्टिकोण से असाधारण रुप में बना है। इसकी विशिष्टताओं में बैठने वाले व्याल जिनके चेहरे चोंच वाले अथवा उनके समान हैं, बरामदे के दोनों छोर के अग्रभाग के स्तम्भों के तल पर इनको सुशोभित किया गया है। उनके सिरों के ठीक ऊपर प्रवेश रक्षकों को चित्रित किया गया है। मंदिर की चारों दिशाओं में लटके हुए कंगनी कुडु मेहराब से अलंकृत है। उनके ऊपर लघु मंदिरों की डोरी में कर्मकूट एवं शाला निर्मित है। पीपे के समान छत के ऊपरी हिस्से में तीन प्रमुख नासिका हैं। इनमें से मध्य वाला अन्य दो की अपेक्षा ऊपर की ओर उठा हुआ है। इसके प्रत्येक पर एक त्रिशूल वाला सिर है।[5] गणेश रथ की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें वर्तमान समय में भी पूजा की जाती है। बरामदे के पीछे आयताकार मंदिर कक्ष में गणेश जी की एक छवि है।

भीम रथ एक पीपे के आकार वाली छत के साथ एक आयताकार दो मंजिला मंदिर है। यह अपने पुरातन रुप में लकड़ी से निर्मित स्वरुप से भिन्न प्रकार की छवि प्रस्तुत करता है। भीम रथ एक विशालकाय रथ है, जिसकी लम्बाई तथा शिखर गजपृष्ठाकार अर्थात् अर्द्धवृत्ताकार मेहराब के रुप में है। इसके ऊपर स्तूपिकाओं की एक पंक्ति प्राप्त होती है। भीम रथ अपूर्ण स्थिति में है। धर्मरथ के समान इसमें आभासी संधान है, क्योंकि उसका आदितल एक संकीर्ण मंडप से घिरा हुआ है। इसकी दीवारे कोनों की ओर लम्बे एवं छोटे पार्श्वों पर स्थित दो स्तम्भों तथा दो भित्ति स्तम्भों के मध्य भाग में खुले अग्रभागों को घेरती है। इसमें स्तम्भ एवं भित्तिस्तम्भ व्याल पर आधारित है। इसमें मण्डप के ऊपर कूट, शाल की पंक्ति निर्मित प्रवेशद्वार हैं। मंडप के ऊपर पार्श्वों पर, चारों कोनों पर कूटों के हार एवं बीच में शालाएं हैं। पश्चिमाभिमुख आयतकार मंदिर शयन मुद्रा में लेटे हुए विष्णु के लिए अभिप्रेरित थे जिनका सिर दक्षिण और पैर उत्तर में हो। आयताकार ग्रीवा जो गर्भगृह की दीवारों की निरन्तरता में ऊपर उठती है। ग्रीवा शिखर के दोनों ओर लंबी भुजाओं पर तीन आकारों में सुप्रक्षिप्त पांच नासिकाएं प्राप्त होती हैं। इसमें मध्यवर्ती नासिका सबसे बड़ी, दोनों छोरो पर मध्यम आकार की तथा अंतर्वर्ती सबसे छोटी है। अपने संयोजन में प्रस्तर के साथ तीन बड़ी नासिकाएं पूर्ण नासिकाओं का द्योतक है। दोनों छोटी नासिकाओं में प्रस्तर का अभाव पाया जाता है। हार मंडल के कूटों और शालाओं के बीच हारान्तर भागों में यह दिखाई देता है। इस प्रकार यह 8रथ अकेला ही ग्रंथों में वर्णित नासिकाओं के विविध रुपविधानों का प्रदर्शन मिलता है।[6]

इस काल के रथों की सबसे बड़ी विशेषता छत के हिस्से में लघु मंदिरों के प्रकारों में बाद की शताब्दियों में प्रचलित रहे हैं। इसका स्तम्भयुक्त बरामदा एवं उसके साथ एक चलने वाले मार्ग के द्वारा आयताकार तीर्थ कक्ष को बनाया गया है तथा इसके लिए निर्मित किया गया था। इसकी खुरदरी रुपरेखा चट्टान में बनाई जा सकती है। रथ मंदिर के पश्चिम की ओर का हिस्सा पूरी तरह से खुला हुआ है, जिसमें सामने की तरफ केवल दो स्तम्भ हैं। मंडप एक परिक्रमा मार्ग के साथ बरामदे की तरह मंदिर का एक घेरा बनाता था। इस मंदिर के सिंह आधारित स्तम्भ पूर्णता के विभिन्न चरणों को प्रदर्शित करते हैं, जबकि कोने के भाग को मोटे रुप में तराशा गया है। मंदिर के भूतल पर कुडु मेहराब के साथ एक कंगनी को सबसे ऊपर बनाया गया है। इसकी असामान्य लम्बाई मंदिर की रुपरेखा को प्रभावशाली बनाता है। कंगनी के ऊपर लघु मंदिरों की डोरी में एक साथ साला एवं कर्णकूटों को तराशा गया है।

लघु मंदिरों एवं ऊंची दीवारों के मध्य एक गलियारे के लिए स्थान बना हुआ है। ग्रीवा छत को आधार प्रदान करने का कार्य करता है। इसके अलावा पांच आले मिलकर ग्रीवा कोष्ठ का निर्माण करते हैं। यह सभी अलग – अलग आकारों में प्रमुख कुडु मेहराबों द्वारा ताज पहनाए जाते हैं, जो छत के ऊपरी हिस्सों को प्रक्षेपित करते हैं। इनकों सामान्य रुप से नासिक कहा जाता है और मूल संरचना में वातायनी के रुप में कार्य करता था। त्रिअंकी मेहराब के मुख्य भाग को फूलों से चित्रित किया गया है, जो कि बाहरी छोर पर मकर पर जाकर समाप्त होता है। त्रिअंकी भाग के अन्दर केन्द्रीय प्रकोष्ठ चारो तरफ से घिरा हुआ एक मंजिला भवन है, जिसका शिखर गोलाकार है।[7] भीम रथ के परीक्षण से ज्ञात होता है कि इसके निर्माण के दौरान एकाएक इसको बन्द कर दिया गया था। इस मंदिर में विष्णु की झुकी हुई आकृति अथवा कुछ स्तम्भों की अस्पष्ट रुपरेखाएँ लगभग पूर्ण होने की स्थिति में थी, यह सभी अचानक परित्याग की ओर संकेत करते हैं।

महाभारत में पांडवों के जुड़वाँ भाइयों नकुल एवं सहदेव के नाम पर रथों के समूह का पाँचवाँ नाम रखा गया है। यद्यपि सामान्य रुप से इसे इन दोनों नामों को मिलाकर प्रस्तुत किया गया है। इस में पहली बार अर्द्धवृत्त कक्ष योजना का प्रयोग इसमें किया गया है, जो कि बौद्ध वास्तुकला में स्तूप को इसके गोलाकार छोर पर रखा गया था। कृष्णा घाटी में इक्ष्वाकुओं के द्वारा विजयपुरी के पुष्पभद्रास्वामी मंदिर तथा परवर्ती काल के एहोल के दुर्गा मंदिर में इसका प्रयोग किया गया है। परवर्ती शताब्दियों में पल्लवों एंव चोलों के संरचनात्मक मंदिरों में इसका प्रयोग बहुतायत में किया गया। इसमें बैरल के आकार की छत हाथी की पीठ से बहुत अधिक समानता रखती है, इस कारण से इस प्रकार के मंदिरों को गजप्रस्थ कहा जाता है।[8] सहदेव रथ के ठीक किनारे पर ग्रेनाइट पत्थर से एक विशाल हाथी को उकेरा गया था। इस रथ की

ऊपरी मंजिल एक छोटे पैमाने पर एक चट्टान से बनी चर्या गुफा के बाहरी हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें केवल आन्तरिक एवं अग्रभाग ही दिखाई देता है।

इस रथ का मुख दक्षिण दिशा की ओर है। इसमें एक छोटा सा बरामदा कटा हुआ है, जिसकी छत पर दो सिंह स्तम्भ बने हुए हैं। मंदिर के प्रवेश भाग में हाथियों को चित्रित किया गया है, जो कि महाबलिपुरम की वास्तुकला में और कहीं भी नहीं मिलता है। इसके पूरा होने के विभिन्न चरणों में स्तम्भों को उकेरा गया है। इसका खाका एक लकड़ी के फ्रेम वाले ढ़ाचे से की जाती थी, जिसके आन्तरिक भाग में ईंट एंव प्लास्टर को भरा जाता था। यद्यपि इस मंदिर का बाहरी भाग आधार से ऊपर तक अधोमुखी है। इसमें एक छोटा आयताकार मंदिर है। इस सुन्दर नक्काशीदार छोटे रथ में दो लटकते हुए कंगनी, पूरी तरह से गठित है तथा प्रत्येक तल का सीमांकन करते हुए तथा पूरी संरचना के चारो ओर चल रहे हैं। इनको कुडु मेहराब से सजाया गया है। इसमें से गंधर्व के चेहरे बाहर की ओर दिखाई देते हैं। इनके कोनों के ऊपर लघु मंदिर कर्णकूट एवं साला प्रकार के हैं तथा दूसरी मंजिल में दो अपसाइडल मंदिर की रुपरेखा है। इसके छत के किनारे स्तूप जैसे हैं। एक छोटा सा सजावटी मंदिर इसके विशाल सिरे के मेहराब को भरता है।[9] विभिन्न आकारों की कुडु आकार की नासिका, फावडे के सिरो के साथ, पीपाकार छत के लम्बे किनारों से निकलती है।

अर्जुन रथ का अध्ययन करने से उसमें एवं धर्मराज रथ के मध्य बहुत सी समानता दिखाई देती है। अर्जुन रथ को धर्मराज रथ के लघु स्वरुप में देखा जा सकता है। वास्तव में यदि मंजिल निर्माण योजना को छोड़ दिया जाए तो दोनों के स्वरुप लगभग समान दिखाई देते हैं। अर्जुन रथ में दो मंजिल देखने को मिलते हैं। पिरामिड के आरोही स्वरुप में देखने को मिलता है। यह एक अष्टकोणीय शिखर के रुप में दिखाई देता है। गुम्बज के किनारों तथा ग्रीवा के भित्ति स्तम्भों को ऊपर की ओर ले जा कर एकीकृत करना, प्रत्येक ताल के चारों ओर कुडु मेहराब के साथ कंगनी को ऊपर की ओर ले जाया गया है। जिसके कोनो पर कर्णकूट के साथ साला निर्मित है, जो कि भित्ति स्तम्भों के सहारे स्थिति है। इसमें दिव्य जोड़े की सुन्दर आकृति वाली मूर्तियाँ हैं, जो केवल कमर तक ही खुदी हुई हैं। इस रथ मंदिर के बाहरी स्वरुप को निर्धारित करने वाले यह सभी तत्व दोनों ही मंदिरों में समान रुप से पाए जाते हैं।[10] अर्जुन रथ की मंजिलें न तो धर्मराज रथ के समान न तो कार्यात्मक है तथा न ही सुलभ। यहां पर लघु मंदिर के प्रमुख भाग से सीधे सटे हुए हैं तथा उनके मध्य में खाली स्थान को नहीं रखा गया है।

इस मंदिर के पश्चिम की तरफ लघु पूजागृहों का एक छोटा सा बरामदा कटा हुआ है। इसके पीछे वाली दीवारों पर देवताओं की प्रतिमाओं को रखने के लिए एक कुर्सी बनी हुई है। संभव है कि परवर्ती काल में उत्तर की तरफ वाली दीवार में अभिषेक जल के निकास द्वार के साथ –

साथ आनुपातिक रुप से बहुत बड़े लिंग के लिए एक गर्तिका छेद को मंदिर के फर्श में काट दिया गया हो। इस पूजागृह में जिसमें चौकोर छेद अलग से नक्काशी करके लगाया गया है। पल्लव एवं चोल मंदिरो में इस प्रकार के मंदिर के पत्थर से ही उकेरा गया है। इसके दोनों कोनों पर तथा प्रत्येक पक्ष के मध्य रिक्त दीवारों को तीन भूस्तरीय रुप में तैयार किया गया है। धर्मराज रथ के समान अर्जुन रथ की सबसे बड़ी विशेषता भूतल के अनेक भागों में निर्मित आकृति प्रतिमाएँ हैं। यह मूर्तियाँ वह दीवार से निकल कर भक्तो को प्रदक्षिणापथ की ओर आमंत्रित कर रही हैं। इसके सभी देवकोष्ठों में दिव्य आकृतियों को प्रतिष्ठित किया गया है। दक्षिण में शिव के वृषभ भृत्य है, जो अपने बैल पर झुके हुए होते थे। पूर्व में स्कंद अपने हाथी पर प्रतिष्ठित हैं तथा उत्तर में विष्णु अपने वाहन गरूड़ पर बैठे हुए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य ताकों में शाही जोड़े, राजा एवं रानियों को रखा गया है। इन सभी की उपस्थिति न केवल मंदिर की दिव्यता को बढ़ाते हैं, वरन् उनके साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध को भी व्यक्त करते हैं। इसके साथ ही इनके द्वारा पल्लव दरबार की संस्कृति को भी प्रभावित करते हैं। इसके विभिन्न कोनों पर शाही पोशाक पहने हुए योद्धा द्वारपालों को गहन भक्ति भाव में लीन दिखाया गया है। पूर्व की ओर शाही वस्त्रों में दो महिलाओं की प्रतिमाएँ हैं। इसके अतिरिक्त विशिष्ट पल्लव भावना को प्रदर्शित करती एक दाढ़ी वाले ऋषि को अपने शिष्यों के साथ बनाया गया है, जो किसी निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

अर्जुन रथ के इन शाही द्वारपालों के सम्बन्ध में श्री अरबिन्दों ने लिखा है कि यह महान शैलियों एवं कलाकृतियों का युग माना जा सकता है। जैसा कि इसमें कहा गया है और दिखाई भी देता है कि भारतीय सिद्धान्त, रुप एवं समोच्च् की अत्यधिक सरलता को सुरक्षित रखने के लिए छोटे – छोटे विवरणों का दमन भारतीय मूर्तिकारों का मुख्य उद्देश्य रहा है। इसके साथ उनमें आध्यात्मिक शक्ति के महत्व को रेखांकित करना उनका प्रमुख लक्ष्य था। मंदिर के इस शाही द्वारपाल के शांत चित्त में एक गुप्त एवं संयमित वीर ऊर्जा के दर्शन होते हैं। इन प्रतिमाओं में बहुत ही गहन एवं शक्तिशाली अर्थों में विश्लेषित किया जा सकता है। स्थिर एवं गहन ईश्वरीय भावना की यह एक आदर्श व्याख्या है। वास्तव में यह भारतीय कला की महानता है।[11]

वलैयांकुट्टई रथ के उत्तर में उत्तराभिमुख अवस्था में जुड़वा पिडारी रथ पाए जाते हैं। यह रथ अपने अर्धमंडप के साथ शुद्ध नागर शैली की श्रेणी में निर्मित है। इसमें अंतर मात्र इतना है कि द्वितीय तल के ऊपर कोई हार नहीं मिला है। इस प्रकार मामल्लपुरम श्रृंखला का यह अंतिम तथा आठवीं शताब्दी के परवर्ती विमानों के पूर्वानुमान का यह एक अग्रिम लक्षण है। ग्रीवा शिखर मुखों में प्रक्षिप्त नासिकाएं बनाई गई हैं। उत्तरी एवं दक्षिणी पिडारी रथ में उनके आदितलों की दीवारों पर मूर्तिशिल्प का अभाव पाया जाता है तथा यह दोनों ही रथ अपूर्ण स्थित में है।

मामल्लपुरम की विशिष्ट स्थापत्य शैली तथा इसके सांस्कृतिक महत्त्व को देखते हुए यूनेस्को ने इस सम्पूर्ण क्षेत्र को 1984 में विश्व धरोहर स्थल की सूची में स्थान प्रदान किया। वर्तमान समय में यह क्षेत्र भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 श्रीनिवासन, के0, उमेश चन्द्र दीक्षित, दक्षिण भारत के मंदिर, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत 2016, पृ0 सं0 82

2 मिश्र, रमानाथ, भारतीय कला की विरासत, मैकमिलन्स प्रकाशन नई दिल्ली, 1977 पृ0 सं0 67

3 वाजपेयी, कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1972 पृ0 सं0 129

4 दूबे, श्यामचरण (स0), भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1987 पृ0 सं0 102

5 कुमारस्वामी, ए0 के0, हिस्ट्री ऑफ इंडियन एण्ड इंडोनीसियन आर्ट, 1965, पृ0 सं0 126

6 अग्रवाल, वी0 एस0, इंडियन आर्ट, पृथ्वी, वाराणसी, 1965 पृ0 सं0 98

7 Aiyangar, S. Krishnaswami, 'The Antiquities of Mahabilipuram', Indian Antiquary, Vol. XIV (1917). P.N. 78

8. Aledandor Rea : Pallava Architecture, arch. India, New Imperial Series, Vol.XXXIV, Madras, 1909 P.N. 39

9. Gangooly, O.C. & Goswami: The Art of the Pallavas, Calcutta, 1957. P.N. 198

10. Discovered Structures at Mamallapuram (Mahabalipuram)', Quarterly Journal of the Mythic
SocietyVol. XI, No. 3 (July-September 2000). P.N. 81

11. Srinivasan, K.R., 'The Pallava Architecture of South India', Ancient India, No. 14 (1958). P.N. 123